(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 5] पंचम् विधान सभा के पंचम सत्र का प्रथम दिवस [संख्या 1

शनिवार,

2 मार्च, 1974

विधान सभा की बैठक म. प. 12.1 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामकिशोर व्यास, अध्यक्ष, पदासीन)

शपथ एवं प्रतिज्ञान

श्री अध्यक्ष : शपथ ग्रहण।

श्री सचिव (विधान सभा) : श्री गिरधारीलाल व्यास।

श्री मीठालाल (लालसोट) : (करतल ध्वनि होने पर) दो दो हाथ से।

[श्री गिरधारीलाल व्यास (आसींद) शपथ ग्रहण की]

श्री सचिव (विधान सभा) : श्री रामकिशन।

श्री जनार्दनसिंह गहलोत (गांधी नगर, जयपुर) : यह वाक आउट कर गये थे। अब शपथ ले रहे हैं।

श्री मोहम्मद गफ्फार अली (जोहरी बाजार, जयपुर) : वाक आउट करने का अधिकार है और शपथ लेने का भी अधिकार है।

श्री जनार्दनसिंह गहलोत : आज आज तो माफ कर देते हैं। दो दो नाटक क्यों?

श्री मोहम्मद गफ्फार अली : छः छः नाटक करेंगे।

[श्री रामकिशन (भरतपुर) : ने सत्य निष्ठा से प्रतिज्ञान किया]

श्री मीठालाल : शुरू शुरू में यह वाक आउट कर गये थे।

श्री जनार्दनसिंह गहलोत : अभी देखते हैं और क्या क्या करेंगे?

श्री शंकर सिंह (नसीराबाद): कह दो आयन्दा नहीं करेंगे।

सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्र

श्री सचिव (विधान सभा) : महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की प्रति सदन की मेज पर रखता हूं।

(कृपया परिशिष्ट 1 देखिये)

शोक प्रकट एवं श्रद्धांजलि

श्री अध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति।

श्री हरिदेव जोशी (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा के पिछले अधिवेशन के बाद में हम लोगों को बहुत ही दुखद दौर में से गुजरना पड़ा। सदन के माननीय सदस्य श्री रामसिंह जो

Page No. 2

②

(श्री हरिदेव जोशी)

एक दूसरे माननीय सदस्य श्री रोशनलाल जी शर्मा एवं श्रीमती निर्मला जी, जो इस सदन की सदस्या रही हैं, का दुःखद देहावसान इस बीच में हुआ।

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि आपको विदित है, श्री रामसिंह जी स्वस्थ थे। यहीं पर जयपुर के अन्दर एक दिन वह अपने निवासस्थान के बाहर गये और दूसरे दिन सवेरे सवेरे इत्तला मिली कि वह अपने निवास स्थान के बाहर सीढ़ियों के ऊपर मृत पड़े हुए हैं। हम लोगों को, जिन्होंने भी इसे सुना, बहुत ही चोट लगी।

अध्यक्ष महोदय, श्री रामसिंह जी इस सदन के अन्दर सबके स्नेह–भाजन थे। वह अत्यन्त ही शांत प्रकृति और मिलनसार व्यक्तियों में से एक थे। आम तौर पर वह अपने काम से लोगों से मिलते और इसके सिवाय वह कभी दूसरी उलझनों में पड़ते नहीं थे। उनके देहावसान से जहां उनके परिवार की बहुत बड़ी क्षति हुई है वहां पर उनके मित्रों की, सहयोगियों की और कांग्रेस पार्टी की भी बहुत बड़ी क्षति हुई है।

अध्यक्ष महोदय, मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी ओर से और इस सदन के माननीय सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से यह प्रार्थना करता हूं कि वह उनके परिवार को इस शोक को बर्दाश्त करने की क्षमता दे।

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि आपको विदित है, इस सदन के एक दूसरे माननीय सदस्य श्री रोशनलाल जी शर्मा का भी इस अवधि के अन्दर देहावसान हुआ। एक प्रकार से यह एक ट्रेजिक डेथ थी। 16 तारीख को तो श्री रोशनलाल जी शर्मा के पुत्र का विवाह हुआ था, बारात लेकर वह उदयपुर वापिस लौटे ही थे, 20 तारीख को उन्होंने शादी का जलसा रखा था, उनके साथी, मित्र, प्रशंसक वहां एकत्रित होने को थे, पार्टी के लिये तैयारियां हो रही थीं, इसी बीच में एक ट्यूब लाइट खराब हो गई। उसको ठीक करने के लिए उन्होंने हाथ ऊंचा किया, ऊपर चढ़े कि उन्हें इलेक्ट्रिक शॉक लगा। नीचे कढ़ाई चढ़ी हुई थी। उसमें झटका खाकर वह गिर गये। घुटनों से लेकर कमर तक का सारा हिस्सा बहुत ही बुरी तरह से जल गया। वह बहुत ही साहसी थे। पहले इलेक्ट्रिक शॉक को और फिर जलन को भी वह बर्दाश्त कर गये। वह अस्पताल लाये गये। वहां पर उनका हर सम्भव इलाज किया गया। किन्तु विधि का विधान कुछ दूसरा ही था। रोशनलाल जी शर्मा जिन्दगी भर परिस्थितियों से संघर्ष करते रहे थे। उन्होंने मृत्यु से भी संघर्ष किया। इस दरम्यान में दो तीन बार ऐसा लगा कि अभी प्राणान्त हो, अभी प्राणान्त हो, किन्तु ऐसा लग रहा था कि जैसे वह संघर्ष कर रहे हों मौत से भी।

अध्यक्ष महोदय, आजादी के बाद और आजादी से पहले कई सामाजिक कार्यकर्ता और राजनैतिक कार्यकर्ता हमारे बीच में आए हैं मगर बहुत कम ऐसे लोग हैं जिन्होंने समाज के अत्यन्त पिछड़े हुए और गिरे हुए, दबे हुए लोगों के लिए काम किया हो और उसे ही अपना कार्य क्षेत्र बनाया हो। उदयपुर जिले के भील क्षेत्र को उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र

(श्री हरिदेव जोशी)

बनाया और मैं कह सकता हूं कि वह भीलों में भील हो गए। रोशनजी ने भीलों के उत्थान, उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अपने आप में बहुत चेष्टा की। मुझे मालूम है, शायद सन् 1945 का किस्सा है जब सबसे पहले मैंने उन्हें एक गांव में भीलों के बीच में बैठा हुआ देखा था। उदयपुर शहर से निकला हुआ एक आदमी मोणों, भीलों की पाल में बैठे, अपने आपको खपावे, यह एक बहुत बड़ी बात थी। वह एक बहुत ही संघर्षशील व्यक्ति थे। उन्होंने अपने विचारों और सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं किया और इसलिए कई बार वह राजनैतिक क्षेत्र के अन्दर बहुत ऊंचे रहने वाले लोगों के कोपभाजन भी बनते थे। कई बार उनका उनके साथियों से भी मतभेद होता था। वे अन्कम्प्रोमाइजिंग थे। वे गरीबों के लिए लड़ते थे। सामंती तत्वों के मुकाबले में उदयपुर में उन्होंने छोटा कहे जाने वाले तबके का पक्ष लेकर संघर्ष किया। इन पिछले 30 वर्षों में मैंने उन्हें नजदीक से देखने की कोशिश की है।

जिस इलाके से मैं आता हूं वह मध्य प्रदेश से लगा हुआ है, गुजरात का भी भील इलाका है। अखिल भारतीय स्तर पर ठक्कर बापा ने भीलों में काम किया, गुजरात में लक्ष्मीदास भाई ने रामा भाई नायक ने काम किया। दक्षिणी राजस्थान में स्वर्गीय श्रीगौरीशंकर उपाध्याय, माणिक्य लालजी वर्मा और भोगीलालजी पाड्या ने भीलों के काम में अपने आपको खपाया। इसी तरह से दक्षिणी हिस्से में रोशनलालजी शर्मा ने अपने आपको लगाया।

रोशनजी की मृत्यु से कांग्रेस ने एक ऐसा कार्यकर्ता खोया है जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। रोशनजी के दोस्तों ने एक अजीज खोया है। उदयपुर में उनके मित्रों और प्रशंसकों की एक टोली है। मगर उन सबसे ज्यादा अगर किसी का नुकसान हुआ है तो मैं कह सकता हूं कि भील समाज का हुआ है जिसके अंदर वह काम करते थे। मैं उस साथी की स्मृति में अपनी ओर से और इस सदन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को शांति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, एक अत्यन्त ही दारुण अथवा व्यक्तिगत क्षति श्रीमती निर्मलाजी के निधन के रूप में हमें भुगतनी पड़ी है। निर्मलाजी इस सदन की सदस्या रही थीं। माननीय सदस्यों को उनके सम्पर्क में आने का मौका मिला था। एक अत्यन्त शालीन, सहृदय, स्नेही बहन के निधन का सबको अफसोस है। एक लम्बे अर्से से वह बीमार चली आ रही थीं। माननीय सदस्य श्री यशवंतसिंह नाहर की वह धर्म पत्नी थीं। परिवार ने उनके प्राणों को बचाने के लिए अपनी ओर से सब कुछ किया। किन्तु ईश्वर के घर की टूटी हुई आदमी के हाथ से जुड़ती नहीं है, वह हमारे बीच में से चली गई।

उनका देहावसान उनके परिवार के लिए सहयोगियों के लिए तो अपार क्षति

(५)

(श्री हरिदेव जोशी)
है ही नाहर साहब के लिए एक अपूर्ण्य क्षति है, एक ऐसी क्षति है जिसको हर आदमी समझ सकता है और महसूस कर सकता है। उनकी स्मृति में मैं अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं अपनी ओर से और सदन की ओर से और प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनके परिवार को और उनके स्नेहीजनों को इस क्षति को बर्दाश्त करने की शक्ति प्रदान करें।

श्री गुमानमल लोढ़ा (जोधपुर) : अध्यक्ष महोदय, सदन के माननीय नेता महोदय ने गत सत्र और इस सत्र के बीच की अवधि में इस सदन के दो माननीय सदस्यों के उठ जाने व पिछली विधान सभा में हमारे यहां पर जो सदस्या थीं निर्मला जी उनकी असामयिक मृत्यु पर जो संवेदना के के भाव प्रकट किए हैं, हम सब उनके साथ हैं। गत सत्र में व उसके बाद ऐसे कई बार अवसर आए कि हमारे बीच में से साथी, कार्यकर्त्ता व हमारे विधायक बिछुड कर चले गए। एक साथ दो विधायक पिछले और इस सत्र के बीच में चले गये।

श्री रोशनलालजी शर्मा का निधन वास्तव में उदयपुर जिला कांग्रेस के लिए ही नहीं बल्कि दलित वर्ग, शोषित वर्ग, उत्पीड़ित वर्ग के लिए बहुत बड़े अभाव के रूप में खटकता रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री रोशनलाल जी उन व्यक्तियों में से थे जो दलित वर्ग और पिछड़े वर्ग के लोगों का कार्य करते समय अपने आपको भूल जाते थे। स्वतन्त्रता के पहले और स्वतन्त्रता के पश्चात् उन्होंने भीलों के लिये और पिछड़े वर्ग के लिये, दलित वर्ग के लिये जो कार्य किया उसमें उन्होंने अपने आपको नींव के पत्थर की तरह रखा। उन्होंने दलित वर्ग के लोगों को समर्थन दिया। उनकी मृत्यु के समाचार आने के पहले जब डाक्टरों ने उनकी मृत्यु घोषित कर दी और बाद में समाचार पत्रों में जब यह खबर आयी कि श्री रोशनलालजी वापिस जिन्दा हो उठे तो हम सभी को बहुत ही प्रसन्नता हुई। लेकिन उसके बाद में हमें यह समाचार मिला कि श्री रोशनलालजी काल के क्रूर प्रहार के शिकार हो गये और वह बचाये नहीं जा सके। श्री रोशनलालजी हमारे बीच में नहीं रहे। अध्यक्ष महोदय, राज्य सरकार ने उनको सभी प्रकार की चिकित्सा उपलब्ध करायी, इतना ही नहीं उनके लिये विदेशों से भी औषधियां उपलब्ध करायी गयी। इतना तक करने के बाद में भी हम उन्हें बचा नहीं सके। वास्तव में उनका अभाव हमेशा इस सदन में ही नहीं, उनके परिवार वालों को ही नहीं, लेकिन उसके साथ साथ दलित वर्ग के लोगों को, पिछड़े वर्ग के लोगों का खटकता रहेगा और इस अभाव की पूर्ति होना असम्भव है। मैं अपनी ओर से व अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं और परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उस महान दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे व उनके परिवार के सदस्यों को इस दुख को सहने की ताकत प्रदान करे इसके साथ ही जो उनकी सेवाओं का अभाव दलित वर्ग के लोगों को, पिछड़े व उत्पीड़ित वर्ग के लोगों को हुआ है हम सभी लोग व अन्य लोग उनकी समस्याओं को हल करने के लिये तत्पर रहें।

Page No. 5

5

(श्री गुमानमल लोढा)

अध्यक्ष महोदय, श्री रामसिंहजी का जो निधन हुआ वह वास्तव में अत्यन्त ही दुर्भाग्यपूर्ण है। वह एक सशक्त सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपने आपको एक साधारण काश्तकार से उठा कर राजनैतिक क्षितिज पर ला रखा। वह बहुत सराहनीय व्यक्ति थे। हमें दुख: है कि वह आज हमारे बीच नहीं रहे। मैं अपनी ओर से व अपने दल की ओर से परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके परिवार वाले लोगों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही स्वर्गीय श्रीमती निर्मला देवी नाहर, भूतपूर्व विधान सभा सदस्या के लिये जो अभी सदन में मुख्य मन्त्रीजी द्वारा कहा गया उनके बारे में मैं भी कुछ निवेदन करना चाहता हूं। स्वर्गीय श्रीमती निर्मलादेवी नाहर एक बहुत ही प्रतिभाशाली सामाजिक व राजनैतिक कार्यकत्री थी। उनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ था जिनकी औरतें जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने घरों की चार दीवारी में ही रहती हैं। उन्होने उन चार दीवारी से निकल कर समाज सेवा का कार्य करके समाज की महिलाओं के लिये एक नया आदर्श पैदा किया। उन्होंने महिलाओं को एक दिशा दी। उनका अभाव न केवल इस सदन के सभी माननीय सदस्यों को ही और न उनके परिवार के माननीय सदस्य श्री यशवन्तसिंहजी नाहर, जो कि इस समय सदन में बैठे हैं, को खटकता रहेगा बल्कि भीलवाड़ा के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और हमारे देश की सभी महिलाओं को हमेशा खटकता रहेगा। मैं अपनी ओर से व अपने दल की ओर से परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे व उनके परिवार वालों की ओर हम सभी को उनका अभाव सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री मीठालाल (लालसोट) : अध्यक्ष महोदय, यह सदन के लिये दो साल में दूसरी बार है जबकि विधान सभा के सत्र शुरु होने पर प्रारम्भ में ही हमें शोक प्रकट करना पड़ रहा है हमें यह दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे बीच में बैठने वाले दो माननीय सदस्य अब हमारे बीच में नहीं रहे। अध्यक्ष महोदय, जब गत सत्र शुरू हुआ तब भी भगवान ने हमारे मुख्य मन्त्रीजी को हमारे बीच में से उठा लिया और आज भी ऐसा समय है कि विधान सभा सत्र होने से पहले हमारे बीच से दो माननीय सदस्य को भगवान ने हमारे बीच से उठा लिया।

स्वर्गीय श्री रोशनलालजी एक अच्छे कर्मठ राजनैतिक व सामाजिक कार्यकर्ता थे जैसा कि अभी मुख्य मन्त्रीजी ने उनके बारे में सदन में कहा। मेरा श्री रोशनलाल जी को निकट से देखने का मौका एक कमेटी में मिला। स्वर्गीय श्री रोशनलालजी ऐसे व्यक्ति थे जो कि आजकल के कार्यकर्त्ताओं से भिन्न थे। वह उन व्यक्तियों में से थे जो कि प्रदर्शन कम और काम ज्यादा करने में विश्वास रखते थे। उनके नहीं रहने से उनका अभाव न केवल उनके परिवार वालों को और इस सदन को ही खटकता रहेगा बल्कि दलित वर्ग के लोगों को भी खटकता

(श्री मीठालाल)
रहेगा पिछड़े वर्ग के लोगों के लिये उनकी क्षति पूर्ति होना बहुत ही सम्भव है।

अध्यक्ष महोदय, श्रीमती निर्मला देवी नाहर, श्री रामसिंह जी व श्री रोशनलाल जी के दुखद निधन पर मैं और मेरा दल उनकी आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है और परम पिता भगवान से प्रार्थना करता है कि इन दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करे। साथ में भगवान से यह प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वाले सदस्यों को उनके निधन से जो दुःख हुआ है उसको सहने की ताकत प्रदान करें।

श्री निरंजननाथ आचार्य (मावली) : अध्यक्ष महोदय, यह अत्यन्त ही दुखद वेला है जब कि हम एक साथ दो माननीय सदस्यों के निधन पर शोक प्रकट कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, शोक प्रकट करना और दर्द होने में बहुत अन्तर होता है। अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री रोशन लालजी से मेरा सम्पर्क व्यक्तिगत और राजनैतिक दोनों ही काफ़ी लम्बे अरसे से रहा। वह एक झोंपडी से उठ कर समाज के उच्च स्तर पर आकर रुके। उन्होंने अपने क्षेत्र में, नगर में और गांवों में किसानों, पिछड़े वर्ग के और भीलों के लिये जो कार्य किये वह सराहनीय हैं। उन्होंने पिछड़े और शोषित वर्ग के दर्द को अपना ही दर्द समझ कर काम किया उनकी मृत्यु एक अविस्मरणीय घटना है। वह एक ऐसे कार्यकर्त्ता थे जो कि आजन्म जूझने वाले थे। वह टूट सकते थे पर झुक नहीं सकते थे वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका जन सम्पर्क दलित वर्ग के लोगों के साथ, पिछड़े वर्ग के लोगों के साथ और भीलों के साथ अभूतपूर्व था। उन श्री रोशनलालजी शर्मा के निधन से उस क्षेत्र में जो अभाव हुआ है संभवत: उसकी पूर्ति होना असंभव है।

श्री रोशनलाल जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ, आत्म-विश्वासी थे। अपने जीवन के उस दर्दिले प्रसंग में पड़े हुए भी, वे बराबर मौत से जूझते रहे। कई बार उनके जीवन के विषय में आशायें बंधी और कई बार आशायें टूटी। लगता था कि वे संकट से निकल जायेंगे लेकिन, अध्यक्ष महोदय, नियति का प्रहार और नियति की कोई मंशा कोई समझ नहीं सकता।

श्री रोशनलालजी शर्मा अपने क्षेत्र के तो थे ही किन्तु जो निःस्वार्थ सेवायें उन्होंने अपने क्षेत्र में की, मेरा विश्वास है कि, उनकी अनुपस्थिति उस क्षेत्र में ऐसा अभाव पैदा कर रही है जिसकी पूर्ति होना संभव नहीं है।

श्री रोशनलालजी जब कि मृत्यु से जूझ रहे थे मुझे भी उस दर्दिले प्रसंग से जुड़ने का मौका मिला था। और मैं ही नहीं हजारों की संख्या में लोग प्रति दिन उनके प्राणों की रक्षा के लिये प्रार्थना किया करते थे। राजनेताओं की मृत्यु एक का लाभ और दूसरे का नुकसान होती है परन्तु इस समाज सेवी व्यक्ति के लिये, जन साधना करने वाले व्यक्ति के लिये सारा क्षेत्र उनके निधन से और उनके रोग से एक लम्बे अर्से तक संतप्त रहा था।

Page No. 7

(7)

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

श्री रोशनलालजी श्रद्धेय वर्माजी के पक्के शिष्य थे। अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार कवि का निर्माण नहीं होता है उसी प्रकार एक कार्यकर्ता का भी निर्माण किया जाना संभव नहीं होता है। उनमें जन्मजात कार्यकर्ता के गुण थे, उनमें समाज सेवा के गुण थे और जन्मजात दृढ़ प्रतिज्ञता के गुण थे। उन्ही गुणों के अनुरूप उन्होंने अपने को अपने क्षेत्र में एक लोकप्रिय, जन प्रिय नेता के रूप में रखा। मेरा यह विश्वास है कि उनका प्रभाव राजनीति में रहेगा, उनका प्रभाव समाज सेवा के क्षेत्र में रहेगा और उनका प्रभाव इन वर्तमान परिस्थितियों में मार्गदर्शक के रूप में रहेगा।

श्री रोशनलालजी यथा नाम तथा गुण थे। वे समाज के लिये प्रकाश स्तम्भ थे, समाज के लिये प्रेरणा स्रोत थे और समाज के लिये स्नेह के केन्द्र थे। मैं इस विशिष्ट राजनेता के प्रति, उनकी समाजसेवा के प्रति निष्ठावान और उनके निश्चल व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और प्रभू से प्रार्थना करता हूं कि उस दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, दूसरा प्रसंग श्रीमती निर्मलादेवी के स्वर्गवास का है। एक दैविक विपत्ति इस तरह की इस विशिष्ट परिवार पर न जाने क्यों पडी कि दो महीने तक इस विशिष्ट परिवार को आघात और प्रतिघात लगते रहे।

नाहर परिवार भीलवाडा का एक विशिष्ट परिवार है जिसका राजनैतिक, धार्मिक और समाज सेवा के क्षेत्र में एक अनूठा स्थान है।

अध्यक्ष महोदय, निर्मला देवीजी से मेरा संपर्क सन् 1962 से लगा कर सन् 1967 तक इस सदन के प्रांगण में रहा। उनका व्यक्तित्व उनके दाम्पत्य जीवन को अनूठा रूप प्रदान करने वाला था। और उनका भीलवाडा क्षेत्र के स्त्री समाज और सामाजिक क्षेत्र में उनकी अनुपम सेवायें रही हैं। उनके पति जिनके प्रति उनकी अगाध श्रद्धा और अनन्य भक्ति रही है उनको अपना स्थान इस सदन के प्रांगण में देकर उन्होंने एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने उनके अपने गृहस्थ में भी एक अनूठा आदर्श उपस्थित किया है। उनके पति श्री नाहर के मित्रों के रहने के कारण हम उनको एक सीता के रूप में देखा करते थे। हम उन्हें एक अनुपम शीलवती महिला के रूप में देखते रहे हैं।

भीलवाडा में जैसा मैंने कहा नाहर परिवार का एक विशिष्ट स्थान है। गत दो तीन महीने में इस नाहर परिवार पर आघात और प्रतिघात पडते रहे हैं। हमारे विधान सभा के इस माननीय सदस्य श्री नाहर साहब ने दो महिने पहिले ही अपने लघु भ्राता जो कि एक कर्मनिष्ठ और बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति थे, को खोया और उस प्रहार से वे संभल ही नहीं पाये थे कि उन्होंने अपनी पत्नी को खो दिया। यह उनके ऊपर एक वज्रपात था। इन आघातों के प्रहार से मेरा विश्वास है इस नाहर परिवार को किस प्रकार से साहस मिल सकता है यह एक विवादग्रस्त विषय है। मेरी इस नाहर परिवार के प्रति पूर्ण संवेदना है और मैं श्रीमती निर्मला नाहर के स्वर्गवास पर श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और प्रभू से

(श्री निरंजननाथ आचार्य)
प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

तीसरे माननीय सदस्य श्री रामसिंह थे जिनका निधन हुआ। उनका निधन भी किस प्रकार हुआ। जो व्यक्ति एक दिन पूर्व प्रफुल्लित था वही व्यक्ति दूसरे दिन शव के रूप में हो गया। उनका व्यक्तित्व सरस और सरल था। वे स्मृतियां अपने आप उनके प्रति आकृष्ट करती हैं। उनके निधन पर भी मैं श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री मोहम्मद गफ्फार अली (जौहरी बाजार, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, जो सदमात हमको उस सेशन और इस सेशन के बीच भुगतने पड़े, बर्दाश्त करने पड़े वे यकीनन बहुत ही खिराजे अकिदत हैं। हमने इस असेम्बली के मिलने के बाद हमारे बीच से एक बड़ी शख्सियत बरकतुल्ला खां साहब को खोया और उसके बाद दो हमारे साथी हमसे ले लिये गये।

श्री रोशनलालजी के मुतल्लिक जो खयालात हमारे माननीय श्री आचार्यजी ने जाहिर किये, स्पष्ट किये वे हकीकतन इस किस्म के ख्यालात थे जो वर्षों के बाद बने। मैं उनके प्रति जो श्रद्धान्जलि अर्पित की गयी है उनके प्रति अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धांजलि पेश करता हूं।

दूसरे हमारे माननीय सदस्य श्री रामसिंहजी थे। श्री रामसिंहजी के बारे में जो खयालात पेश किये, जो भावनायें जाहिर की, मैं उनके प्रति भी अपनी तरफ से पार्टी की तरफ से श्रद्धान्जलि पेश करता हूं।

नाहर साहब के प्रति भी संवेदना है। उनकी पत्नी का निधन हुआ और उनके छोटे भाई का निधन हुआ। कुछ दिन पूर्व मैं उनसे मिला था तो मैंने देखा कि उनके ऊपर गम का पहाड़ टूट पड़ा है। रंजोगमा का मुजस्समा है। और मैं जब उनसे मिला, हालां कि उनकी मौत पहले हो चुकी थी, लेकिन उसके तस्करे से भी उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे। तो जो सदमे के बाद सदमा उनको हुआ उससे न सिर्फ मुझको पर सारे सदन को और हमारी पार्टी को उनसे हमदर्दी है। उनके इस सदमे में हम शरीक हैं।

ये तीन हमारे साथी आज हमसे छीन लिये गये हैं। उनको हम श्रद्धान्जलि अर्पित करते हैं और भगवान से दुआ मांगते हैं कि उनके परिवार को यह सदमा बर्दाश्त करने की हिम्मत दे, हौंसला दे और उनके जो भी अच्छे कारनामें हैं उनको जिन्दा रख कर, कायम रख कर उनके परिवार के नाम को रोशन करें। मैं ऐसा सोचता हूं। इन शब्दों के साथ में श्रद्धान्जलि पेश करता हूं।

श्री विट्ठलभाई (पीपलखूंट) : अध्यक्ष महोदय, रोशनलालजी का जो निधन हुआ उससे मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। विधान सभा में जब जब हम लोग आपस में मिलते थे तो प्रेम से लम्बी चौड़ी बातें करते रहते थे। जैसा कि माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने कहा वे आदिवासी क्षेत्र में काम करते थे। यह सही है कि काफी अरसे तक उन्होंने आदिवासी

(श्री विठ्ठलभाई)

क्षेत्र में लोगों की सेवा की। मैं अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से उनकी शांति के लिये प्रार्थना करता हूं।

श्री रामसिंहजी, प्रिविलेज कमेटी के मेम्बर थे, इस कारण हम मिलते रहते थे। लेकिन उनकी मृत्यु भी, न जाने किस कारण से अपने क्वार्टर के बाहर ही हो गई। उनको भी मैं अपनी तरफ से अपने दल की तरफ से श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्रीमती निर्मला देवीजी की मृत्यु से हमारे नाहर साहब को अत्यन्त दुःख हुआ, उनके दुःख में हम भी उनके साथ हैं। नाहर साहब भी हमारी कमेटी के चेयरमैन हैं। इससे हमें दिली दुःख हुआ कि इससे पहले भी उनके परिवार में उनके छोटे भाई की मृत्यु से उनको सदमा हो गया था। मैं अपनी और अपने दल की तरफ से उनको श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री झाबरमल सुन्डा (फतेहपुर): अध्यक्ष महोदय, मुझे और भी दुःख है। मैं तीन के बजाय चार सदस्यों के निधन से दुखित हूं। उन चारों को मैं अपनी ओर से श्रद्धान्जलि अर्पित करने खड़ा हुआ हूं।

इनमें से एक है प्रथम विधान सभा के सदस्य श्री ईश्वरीसिंहजी, जो किसान सभा की ओर से आये थे। उनका नाम लेने से आप चूक गये हैं। वे 92 साल की आयु प्राप्त करके अपने शरीर का अवसान कर गये। उन्होने स्वतन्त्रता संग्राम में भी बहुत जोरों से हिस्सा लिया था और सीकर ठिकाने और जयपुर रियासत के बीच जब लड़ाइयां चलती थी तो उनमें भी हिस्सा लिया था। 92 वर्ष की उम्र प्राप्त करके शरीर को छोड़ना यद्यपि दुःख के साथ एक गौरव की बात भी है। मैं अपनी तरफ से तथा मेरे दल की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

एक कहावत है अध्यक्ष महोदय, कि मत मरियो बालक की मौत और मत मरियो बूढ़े की मौत। नाहर साहब को धर्मपत्नी का देहावसान होने से उनको कितनी तकलीफ हुई होगी यह बूढ़े लोग ही समझ सकते हैं। निर्मलाजी के निधन से नाहर साहब को जो दुःख हुआ है, भगवान से मैं प्रार्थना करता हूं कि उसे सहन करने की सामर्थ्य भगवान उनको दें तथा मृत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। मैं अपनी तथा अपनी पार्टी की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसके अतिरिक्त दो नौजवान साथी इस सदन के, जिनका बहुमूल्य सहयोग हमें मिलता रहा था श्री रामसिंह जी और रोशनलालजी भी हमसे जुदा हो गये। रोशनलालजी को तो मैं तीस साल से जानता हूं। रोशनजी ने राजनीति के साथ इतना मोह नहीं रखा जितना समाज सेवा में अपना समय लगाया और सेवा के माध्यम से यहां पहुंचने में लोगों ने उनसे आग्रह किया और वे यहां भी आ गये। सेवा क्षेत्र के माध्यम से राजनीति में आना उन्होंने उचित समझा था। मैं भगवान से इन दोनों युवा साथियों की आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं। उत्तरायण सूर्य में उनका देहावसान हुआ है इसलिए निश्चय ही अपनी धार्मिक आस्थाओं के हिसाब से

Page No. 10

(श्री भावरमल सून्डा)
तो वे स्वर्ग में पधारे हैं, मैं ऐसा मानता हूं। मैं अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, चौथे माननीय भूतपूर्व सदस्य के लिए जो कहा गया है तो इसे भी आज ही ले लिया जावे।

श्री अध्यक्ष : इसकी तस्दीक करनी है।

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, वे यहां सदस्य तो थे पर खेद का विषय है कि विधान सभा को इसकी सूचना नहीं मिल पाई।

श्री निरंजननाथ आचार्य : कहीं जीवित ही उनको श्रद्धान्जलि न हो जावे।

श्री अध्यक्ष : श्री सूंडाजी की सूचना प्रमाणिक मानली जानी चाहिये।

श्री हरिदेव जोशी : मैं अपनी ओर से, अध्यक्ष महोदय, इस सदन की ओर से श्री ईश्वरीसिंहजी के निधन से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री अध्यक्ष : हमारी विधान सभा का सत्र एक शोक के वातावरण में आरम्भ हो रहा है। ये दुःख और शोक तो संसार में क्रम से चलते रहते हैं। लेकिन कुछ अरसे से काफी हम पर तकलीफे और सदमें पर सदमें आये हैं। गये सत्र में हमारे माननीय सदस्य हमारे मुख्यमंत्री श्री बरकतुल्ला खां हमसे जुदा हो गये। इस सत्र में हमारे यहां के दो बहुत अच्छे वर्तमान सदस्य तथा दो पहले के सदस्य हमसे विदा हो गये। चार व्यक्तियों का दुःख आज हमको है। इनके प्रति जिन शब्दों में माननीय सदस्यों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है उसमें मैं भी अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

श्री रोशनलाल जी से काफी लम्बे अर्से से लगभग 50 के आसपास से मेरा परिचय रहा है। 52 में जब कि वे पहली बार इस सदन के सदस्य बनकर आये तब से तो और भी निकट का सम्बन्ध हो गया। उनके निधन से बहुत अफसोस है। इतने लम्बे अर्से तक जिनसे सम्पर्क रहा तो आज उनके गुण दिमाग में आते हैं। मैं तो उनको रोशन के मानिन्द मानता रहा हूं। उनका मेरा आखिरी सम्पर्क जब वे अपने पुत्र के विवाह के सम्बन्ध में बीकानेर चलने के लिये कहने को आये थे, तब हुआ था। तब कोई कल्पना नहीं की जा सकती थी कि यह हमारा आखिरी सम्पर्क होगा। भगवान की लीला अपार है। इसके बाद उनकी बीमारी की सूचना मिली।

रोशनलालजी एक अच्छे स्तर के सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता थे और मेरा ऐसा मानना है कि जयपुर डिविजन में ऐसा कार्यकर्ता जो गांव गांव में पहुंचा हो आम आदमी के दुःख सुख में साथी थे आदिवासियों की सेवा में पूरा जीवन लगाया हो ऐसे बहुत ही कम हैं। जब कभी अकाल के जमाने में उनको देखा तो गांव गांव में उनको घूमते पाया, घर घर में जाते हुए पाये गये। बीमारी के वक्त लोगों को

(श्री अध्यक्ष)

अस्पताल में दाखिल कराते पाया गया। मतलब ये सारी चीजें उनके जीवन का एक अंग थी। उनकी आदिवासियों की विशेष रूप से सेवा का क्षेत्र रहा। वे उनमें ऐसे घुल-मिल गये थे जैसे उनमें और आदिवासियों में कोई अन्तर ही नहीं हो। वे बराबर राजनैतिक और सामाजिक संघर्ष करते रहे और मैं समझता हूं संघर्ष छोड़ा नहीं, मरते वक्त तक वे जीवन से संघर्ष करते रहे। उस वक्त का संघर्ष जिन्दगी और मौत का संघर्ष था। कभी जिन्दगी की विजय होती तो कभी मौत की विजय होती। अन्त में मौत की ही विजय हुई लेकिन वे कितने जीवठ आदमी थे कितनी मुसीबतों को वे सहन करते रहे। यह कम बात नहीं है–एक जलते हुए कढ़ाहे में गिर गये। बहुत गहरी तकलीफ की बात है। सुनने वालों के लिये ही यह बेहद तकलीफ की बात है। उसके लिये सोचना भी घबराहट पैदा करता है। उसके लिये भी वे जीवन से संघर्ष करते रहे। बलवान आत्मा को बल मिलता है। बहुत बातें हैं रोशन जी के सम्बन्ध में लेकिन समय अधिक नहीं लेना चाहता। इतना ही कहना चाहता हूं रोशन जी का निधन एक क्षति है और यह क्षति न केवल उदयपुर डिविजन में ही है बल्कि सारे राजस्थान में है।

दूसरे हमारे सदन के माननीय सदस्य श्री रामसिंह जी जो चुरू जिले से आये थे वे भी आज हमारे बीच में नहीं है। वे एक लोकप्रिय व्यक्ति थे और अपने इलाके में, चुरू इलाके में उनका काफी सम्मान था। उधर के प्रधान भी रहे हैं और जबसे धारा सभा में चुनकर आये उनका व्यवहार एक बहुत सौजन्यपूर्ण और नियमों के अनुकूल रहा। जब कभी मिले विशिष्टता की छाप छोड गये। उनकी जब सूचना मिली कि अचानक उनका देहान्त हो गया, एक दफा तो यकीन नहीं हुआ लेकिन जब जाकर देखा तो बात सही थी। उनके बच्चे अब भी मेरे दिमाग में घूम रहे हैं। उनका व्यवहार सरल था। हम लोगों को भी उनकी असामयिक मृत्यु का बहुत तकलीफ और असर है।

निर्मला कुमारी जी, भाभी साहब कहूं या निर्मला कुमारी जी कहूं दोनों बातें हैं। वे इस धारा सभा के तृतीय सत्र 62 से 67 तक की सदस्या रही थी। वे महिला समाज में काफी प्रगतिशील और उन्नत विचारधारा रखती थी। पर्दा प्रथा के बहुत खिलाफ थी समाज में बहुत काम किया और विशेष रूप से महिला समाज में उनका काफी योगदान रहा। यहां भी इस सदन में उनका योगदान काफी अच्छा रहा। वे बहुत अच्छा बोलती थीं और मधुरभाषी थी उनको भी हम भुला नहीं सकते हैं।

चौथे श्री ईश्वरी सिंह जी, उनकी भी अभी यहां सूचना मिली कि उनका देहान्त हो गया। उनके बारे में दुख है। वे पहले सदन सन् 52 वाले में सदस्य थे। मुझे याद है ईश्वरी सिंह जी, वे साफा और कुर्ता पहने हुए आया करते थे। बड़े कार्यकर्ता और काश्तकार आदमी थे। उनमें काफी लगन उस काम काज में थी। उनका भी आज अभी मालूम हुआ कि देहान्त हो गया है तो मैं इन सभी विधान सभा के सदस्यों के प्रति आप सबकी ओर से, सामूहिक रूप से और मेरी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि उनको, उनके

(श्री अध्यक्ष)

परिवार के लोगों को और उनके स्नेही लोगों को आत्म शान्ति प्रदान करे।

क्या कहूं सभी अन्दाजा लगा सकते हैं यशवन्त सिंह जी को पत्नी का वियोग सहना पड़ा। यह बहुत बड़ा कष्ट है जीवन का। उनके बच्चों के लिये उनका बिछुड़ना महान दुख है। मां का मरना, बाप का मरना और दुख है, भाई का मरना वह भी कम नहीं है और पत्नी का मरना तो जीवन में भुलाया नहीं जा सकता है। ऐसे सम्पर्क और सम्बन्ध होते हैं उसके अन्दर वह सब में एक विशेषता रखता है। मैं समझता हूं कितनी तकलीफ नाहर साहब को इस वक्त उनकी जुदाई से है। इससे मैं कहूं यह रंज वह है कि किसी को नसीब न हो और बहरहाल यह कह सकता हूं भगवान उनको शक्ति दे कि वे उनको जुदाई को सहन कर सकें।

(सदन ने दो मिनिट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की)

सदन की कार्यवाही सोमवार 4 मई के 11–00 बजे प्रातः तक के लिए स्थगित की जाती है।

कई माननीय सदस्य : 4 मार्च।

श्री अध्यक्ष : हां 4 मार्च। (पुनः) सदन की कार्यवाही 4 मार्च के 11–00 बजे प्रातः तक के लिये स्थगित की जाती है।

श्री निरंजन नाथ आचार्य : आज गलतियां बहुत हो रही हैं।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही 1–00 म. प. सोमवार दिनांक 4 मार्च, 1974 के प्रातः 11–00 बजे तक के लिये स्थगित की गई)

Page No. 13

(13)

परिशिष्ट 1

महामहिम राज्यपाल का अभिभाषण

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : राज्यपाल महोदय, जिस कदर देश में मंहगाई बढ़ी है उसको रोकने में आपकी सरकार असफल रही है, जनता को पूरा राशन देने में असफल रही है। मंहगाई· ··

(राजकीय पक्ष की ओर से समवेत आवाज : विराजो, बिराजो)

(शोरगुल–अश्रव्य)

(श्री मोहम्मद गफ्फार अली एवं श्री रामानन्द अग्रवाल एक साथ बोलते रहे–अश्रव्य)

हम सदन से वाक आउट करते हैं।

(मा. क. पार्टी के सदस्यों द्वारा सदन से बहिर्गमन)

श्री शौकिंग (कुशलगढ़) : राज्यपाल महोदय, आपकी सरकार मंहगाई रोकने में असफल रही है, आपको राशन की व्यवस्था बिल्कुल·····

(राजकीय पक्ष की ओर से एक साथ : बिराजो, बिराजो ····)

(शोरगुल–अश्रव्य)

(समाजवादी दल के सदस्यों द्वारा सदन से बहिर्गमन।)

माननीय सदस्यगण,

विधान सभा के इस बजट अधिवेशन में आपका स्वागत करता हूं।

राजस्थान एक बड़ी मुश्किल के हालात से गुजरा। गये साल करीब सारे राज्य में भीषण अकाल पड़ा और बाद में बाढ़ भी आ गई पर राज्य सरकार ने इनका मुकाबला करने में कोई कसर नहीं रखी कुल 13 लाख 11 हजार लोगों को अकाल में रोजगार दिया। करीब 30 हजार लोगों को असहाय सहायता दी गई। बहुत बड़े पैमाने पर पीने के पानी का इन्तजाम किया गया। पशुओं को बचाने का भी माकूल इन्तजाम किया गया। कुल मिला कर सरकार ने करीब 60 करोड़ रुपये का खर्चा किया। बाढ़ का असर 14 जिलों में पड़ा। इसके लिए भी जरूरत मुताबिक सहायता दी गई। बाढ़ से जिन सड़कों, बांधों इत्यादि को नुकसान हुआ उनको या तो ठीक कर दिया गया है या किया जा रहा है। हाल में आई शीत लहर से भी नुकसान हुआ। इसका जायजा लिया जा रहा है।

कुदरत की मुश्किल के अलावा मंहगाई की एक और बड़ी मुश्किल का आज सामना करना पड़ रहा है। असल में तो सारा देश ही इसके दौर से गुजर रहा है। इससे भी आगे और नजर डालें तो अभी तो सारी दुनियां का ही यह हाल है। खुशहाल देश भी आज इससे चिन्तित हैं। ऐसे समय में राजस्थान की जनता ने धैर्य एवं शान्ति से काम लिया। राजस्थान की जनता ने समझा कि हडतालें और तोड़-फोड़ से हालत और ज्यादा बिगडती है।

सरकार भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही है। भारत सरकार से जितना

मुमकिन हो अनाज मुहैय्या कराने को कोशिश की गई पर भारत सरकार की भी अपनी दिक्कतें हैं। अपनी तरफ से राज्य सरकार ने मोटे अनाजों पर लेवी लगाते समय यह ध्यान रखा गया कि किसान पर ज्यादा भार न पड़े और कन्जूमर को अनाज मिल जाय। लेवी का काम चालू है। इस मौके पर मैं आपसे अपील करना चाहूंगा कि ऐसे बड़े काम में आप सब की पूरी मदद की जरूरत है और अगर यह मदद मिलती रही तो मुझे यकीन है कि यह काम भी पूरा होगा। सरकार ने जमाखोरों पर होर्डिंग प्रीवेन्शन आर्डर जारी किया तथा और भी कदम उठाये। एक जिले से दूसरे जिले में मोटे अनाज भिजवाने में छूट दी गई। व्यापारियों को अब 500 क्विंटल तक अनाज रखने की इजाजत दी गई जिससे बड़े शहरों में ज्यादा अनाज मिल सके। चीनी के बंटवारे में सुधार लाने के लिए राजस्थान क्रय-विक्रय संघ को यह कार्य सौंपा गया। बिजली की कटौती और तेलों की कमी के कारण वनस्पति घी के बंटवाने में कठिनाई रही। फिर भी, सरकार ने इसे ठीक तरह से बंटवाने को कोशिश की। मोटे कपड़े का बंटवारा राज्य सहकारी संघ द्वारा किया जा रहा है। सारी दुनियां में और इस देश में जो तेल का संकट है उसके बावजूद भी मिट्टी के तेल का ठीक बंटवारा करने की कोशिश की जाती रही है।

जिन्स की पैदावार बढ़ाने के लिए सरकार पूरी कोशिश में है। सरकार का यह प्रयास है कि फिफ्थ फाइव ईयर प्लान में राजस्थान नहर के मुख्य कार्य पूरे हो जायं। इसके लिए भारत सरकार को ज्यादा धनराशि देने के लिये कहा जा रहा है। अभी भी राजस्थान नहर से 5 लाख एकड भूमि पर आबपाशी हो रही है। व्यास प्रोजेक्ट के दूसरे यूनिट में करीब 40 लाख एकड फीट पानी इस साल इकटठा किया जा सकेगा। इससे राजस्थान की गंग, भाखरा और राजस्थान नहर क्षेत्रों में और अधिक आबपाशी हो पायेगी। चम्बल, माही और जाखम नहर स्कीमों पर काम चालू है। राजस्थान नहर और चम्बल के इलाकों में आबपाशी और विकास का पूरा लाभ देने के लिए स्पेशल स्कीम्स बनाई गई हैं जो वर्ल्ड बैंक के पास विचाराधीन हैं। सई, मेजा फोडर, जैतपुर, गोपालपुरा जैसी मीडियम स्कीम्स पर भी काम चालू है। माइनर स्कीम्स के लिये बैंकों से मदद ली जा रही है। 26 माइनर इरिगेशन स्कीम्स पर बैंकों के कर्ज से काम चल रहा है। 25 माइनर इरिगेशन स्कीम्स बैंकों के पास मंजूरी के लिए पड़ी हुई है। साल 1974-75 में लगभग 60 माइनर इरिगेशन स्कीम्स और बना कर बैंकों के पास भिजवाई जायेंगी जिससे राज्य में लगभग 8 करोड़ रुपये का काम हो सकेगा।

राजस्थान में बिजली की दैनिक खपत जो साल 1970 में 32 लाख यूनिट थी वह इस साल 71 लाख यूनिट हो गई। इस साल के शुरू में प्रोडक्शन कम था। और मांग ज्यादा पर जुलाई, 73 से प्रोडक्शन और मांग करीब-करीब बराबर हो गई। ज्यादा गांवों में बिजली पहुंचाने का कार्यक्रम तरक्की पर है। पिछले साल 734 नये गांवों में बिजली पहुंचाई गई और 6 हजार के

ऊपर कुओं की बिजली दी गई। इस प्रकार राज्य में जनवरी, 1974 तक 5 हजार से ऊपर गांवों और 73 हजार से ऊपर कुओं में बिजली पहुंच गई है। साल 1973-74 में 15 कलस्टर स्कीम्स रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कारपोरेशन द्वारा मंजूर की गई थीं। 9 स्कीम्स और कारपोरेशन के पास मंजूरी के लिए भिजवाई गई है। इन स्कीम्स के पूरा होने पर करीब 650 और गांवों में तथा करीब 11 हजार 500 कुओं में बिजली मिलेगी। अगले साल बिजली के फैलाव के साथ साथ मौजूदा लाइनों के लोड-बियरिंग कैपेसिटी बढ़ाने का काम हाथ में लिया जायेगा।

पिछले साल की तरह इस साल भी इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड ने साल 1973-74 के बजट में 15 लाख रुपये की धन राशि का प्रावधान पिछड़ी जाति और हरिजन बस्तियों के बिजलीकरण के लिए किया है।

राज्य में डेयरी विकास का बड़ा काम हाथ में लिया गया। (तालियां) बीकानेर व जोधपुर में एक लाख लीटर दूध प्रति दिन की कैपेसिटी के प्लांट लगाये जा रहे हैं जो पूरी तौर पर साल 1974-75 से चालू हो जायेंगे। उदयपुर, भरतपुर, कोटा, भीलवाड़ा, अजमेर में भी डेयरियां लगाई गई जो पूरी तरह से साल 1975-76 में चलेंगी। जयपुर में भी डेयरी का काम अगले साल बढ़ाया जा रहा है ताकि 1976-77 तक एक लाख लीटर दूध रोजाना कैपेसिटी की डेयरी बन जाय। इस कार्यक्रम से पशुपालक और कन्जूमर दोनों को लाभ होगा। डेयरी विकास के लिये एक नये विभाग का भी गठन किया गया है।

पिछले साल राज्य में नये उद्योग लगाने के लिये 21 लाइसेंन्स लेटर्स आफ इन्टेन्ट भारत सरकार से प्राप्त हुए जो सीमेन्ट कपड़े की मिल, इन्जीनियरिंग सामान और कास्टिक सोडा के लिए थे। अभी राजस्थान में सीमेण्ट के 4 कारखाने हैं और 5 व 7 लगभग तैयार हो चुका है। सीमेण्ट की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए पाली और सिरोही जिलों में सीमेन्ट के कारखाने स्थापित करने के लिए भारत सरकार से लेटर्स आफ इन्टेन्ट मिल चुके हैं। कोटा तथा सीकर जिलों के लिए भी ऐसे ही लेटर्स आफ इन्टेन्ट मिलने की आशा है। इस तरह राजस्थान देश में सबसे अधिक सीमेन्ट का प्रोडक्शन करने वाले राज्यों में एक होगा। इस साल 698 बड़ी इन्डस्ट्री लगाने की दरख्वास्तें मिलीं जो भारत सरकार को लेटर्स आफ इन्टेन्ट लाइसेन्स देने के लिए भेजी गई। अलवर मे पब्लिक सेक्टर में स्कूटर साल 1974-75 में तैयार होने लगेंगे। भारत सरकार ने फर्टीलाइजर काम्पलेक्स बनाने के लिए एडवान्स एक्शन के लिए फिफ्थ फाइव इयर प्लान में प्रावधान किया है। कोटा में प्राईवेट सेक्टर में यूरिया खाद कारखाने की कैपेसिटी बढ़ाने की इजाजत भारत सरकार ने दे दी है। इसके अलावा एक एक हजार टन रोजाना की कैपेसिटी का यूरिया खाद का कारखाना कोटा में लगेगा। यह अपनी किस्म का हिन्दुस्तान मे सबसे बड़ा कारखाना होगा।

(तालियां)

स्माल इण्डस्ट्रीज में भी बढ़ोतरी हुई। 1973 में 14 हजार 8 सौ 35 स्माल

Page No. 16

(16)

इण्डस्ट्रीज का रजिस्ट्रेशन किया गया। राजस्थान फाइनेन्स कार्पोरेशन ने साल 1973–74 के पहले 9 महीनों में स्माल इण्डस्ट्रीज को करीब 184 लाख रुपये का कर्ज दिया। इसके अलावा 84 ऐसी स्माल इण्डस्ट्रीज को 133 लाख रुपये का कर्ज दिया गया जो बेरोजगार टैक्नोक्रेट्स लगा रहे हैं।

मैसर्स बीकानेर जिप्सम लि. जिसमें राज्य सरकार के 50 परसेन्ट शेयर थे उनको बढ़ा कर 96 परसेन्ट शेयर कर दिये गये हैं। (तालियां) साल 1974–75 राजस्थान राज्य में खनिज विकास कार्पोरेशन बनाया जाएगा। इसका काम फास्फेट माइनिंग और बेनीफिशियेशन बेस मेटल माइनिंग और बेनीफिशियेशन होगा। झामरकोटड़ा खानों से रांक फास्फेट के माइनिंग का काम तरक्की पर है। वहां से देश के कई खाद के कारखानों को माल भिजवाया जाता है।

इस साल के अन्त तक बस ट्रान्सपोर्ट 25 परसेन्ट नेशनलाइजेशन का टारगेट है। (तालियां) कानूनी और अन्य दिक्कतों के बावजूद राज्य सरकार यह टारगेट पूरा करने की कोशिश कर रही है। पिछले साल के मुकाबले में इस साल स्टेट रोडवेज कारपोरेशन दुगुनी बसें चला रहा है। अगले साल में और नेशनलाइजेशन करने की कोशिश चालू रहेगी।

1973–74 में पिछले साल की तरह प्राइमरी एज्युकेशन पर जोर दिया गया। इस साल करीब 1000 नये प्राइमरी स्कूलों खोले गये और करीब 1500 प्राइमरी स्कूलों को हायर प्राइमरी स्कूल में बदला गया। इस तरह राज्य में अब तक 19 हजार से ऊपर प्राइमरी स्कूल और करीब पांच हजार हायर प्राइमरी स्कूल खुल चुके हैं। इस साल 4 हजार 200 नये मास्टरों को लगाया गया। अगले साल भी करीब इतने ही नये मास्टर और लगाये जायेंगे।

राज्य में दवाइयों में मिलावट को रोकने के लिए बड़े पैमाने पर कदम उठाये जा रहे हैं। दोषी लोगों के लाइसेन्स रद्द किये जा रहे हैं और दूसरी तरह से भी उन्हें कानूनी तौर पर सजा दी जा रही है। बेरोजगार डाक्टरों को रोजगार देने के लिए और गांवों में डाक्टरों को भिजवाने के लिए राज्य सरकार ने एक कर्ज देने की स्कीम चला रखी है। अब तक करीब 150 बेरोजगार डाक्टरों ने इस स्कीम से फायदा उठाया है और मैं आशा करता हूं कि ऐसे ही दूसरे डाक्टर भी इसका पूरा फायदा उठायेंगे। खास कर गांवों में अधिक दवाइयां मुहैय्या करने की कोशिश जारी है।

समाज कल्याण की कई स्कीमें राज्य में चल रही हैं जिनमें से कुछ का मैं यहां जिक्र करूंगा। अभी करीब दो लाख सत्तर हजार बच्चों और गर्भवती माताओं को न्यूट्रिटिव फूड दिया जा रहा है। साल 1974-75 में भारत सरकार की सहायता से एक इन्टीग्रेटेड चाइल्ड वेल्फेयर प्रोग्राम लिया जा रहा है। इसमें महिलाओं और बच्चों को न्यूट्रीशन, एज्युकेशन और हैल्थ सर्विसेज मुहैय्या की जाएगी। पिछड़ी जाति के लोगों के लिए 309 छात्रावास हैं जिनसे

11 हजार बालक और बालिकायें फायदा उठा रही हैं। अनुसूचित जाति एवं जन जाति के ग्रेज्यूएट बेरोजगारों को स्टाइपेन्ड दिया जा रहा है। राजस्थान स्टेट हाउसिंग फाइनेन्सिंग कोआपरेटिव सोसायटी के जरिये इन जाति के लोगों को मकान बनाने के लिए बिना सूद कर्ज दिया जा रहा है। हरिजन बस्तियों में नल व रोशनी लगाने का काम भी चालू है। राज्य में 8 हजार 390 लोगों को ओल्ड एज पेन्शन दी जा रही है।

राजस्थान हाउसिंग बोर्ड 1973-74 में 2600 मकान पूरे बना पायेगा। 1974-75 में साढ़े तीन हजार मकान बनाने की स्कीम है जिसके लिए करीब 7 करोड़ रुपये खर्च किये जायेंगे। कच्ची बस्तियों की समस्या को भी सरकार सुलझाने की कोशिश कर रही है। स्पेशल स्कीम्स प्रोग्राम के तहत जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, उदयपुर में इसके लिये स्कीम्स ली गई। इस साल भारत सरकार एनवायर्नमेण्टल इम्प्रूवमेन्ट स्कीम में जयपुर को भी ले लिया गया है और करीब 52 लाख की स्कीम पर काम शुरू किया जा चुका है।

साल 1973–74 के आखिर तक राजस्थान के 151 शहरी इलाकों में जल सप्लाई स्कीम्स चालू की जा चुकी हैं या चालू होने की आशा है। 1973–74 तक टारगेट के अनुसार 650 रूरल वाटर सप्लाई स्कीम्स पूरी होने की उम्मीद है जिससे लगभग ग्यारह सौ गांवों के 25 लाख लोगों को फायदा होगा। 1974–75 तक लगभग 750 रूरल वाटर स्कीम्स पूरी किये जाने की आशा है जिससे और 700 गांवों में 7 लाख लोगों को फायदा होगा।

राज्य सरकार द्वारा तेन्दू पत्ते के व्यापार का नेशनलाइजेशन किया गया। (तालियां) लकड़ी, कोयला वगैरह के राजकीय व्यापार को और बढ़ाया गया। फोडर बैंक बनाने घास का डवलपमेंट का कार्य भी राज्य सरकार द्वारा हाथ में लिया गया।

साल 1969 तक के अलाटीज को 10 साल के पहले भी राज्य सरकार खातेदारी अधिकार दे रही है। भूमिहीनों को भूमि का आवंटन करना सरकार की खास नीति रही है। अब तक करीब 9 लाख 50 हजार भूमिहीनों को 62 लाख एकड़ भूमि अलोट की जा चुकी है।

राज्य की कानून और व्यवस्था की स्थिति सामान्य रही। सरकार द्वारा पुलिस विभाग के रिआर्गेनाईजेशन के लिए एक कमेटी बनाई गई थी, कमेटी की सिफारिशों को राज्य सरकार ने उसूलन मान लिया है। पुलिस फोरेन्सिक लेबोरेट्री का भी विकास किया गया जिससे आज वह देश की अपनी किस्म की एक लेबोरेट्री है।

राज्य सरकार का जन अभियोग निराकरण के लिये और भ्रष्टाचार को मिटाने का पक्का इरादा है। राज्य के जिलों में डिस्ट्रिक्ट रिमूवल आफ पब्लिक ग्रीवेन्सेज कमेटियों का गठन किया गया। जन अभियोग निराकरण विभाग में 11 हजार शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 8 हजार का फैसला किया गया। सरकार ने अपने कर्मचारियों को भारत सरकार के फार्मूले पर 1–6–73 से महगाई भत्ता देना तय किया है। यह भी

तय किया है कि कर्मचारियों के अभियोग और शिकायतों को निपटाने के लिये एक बोर्ड के द्वारा आरबिट्रेशन करवाया जाय, जोइन्ट कन्सलटेटिव कमेटी और डी.पी.सी. के कार्यक्षेत्र को बढ़ाया जाय। कर्मचारियों के लिए फेयर प्राइस शोप्स का प्रस्ताव भी सरकार के विचाराधीन है। कर्मचारी कल्याण विभाग द्वारा 23 हजार कर्मचारियों का कन्फरमेशन कराया गया 11 हजार 500 पुराने पेंशन के मामले निपटाये गये।

मैं यह भी उल्लेख करना चाहूंगा कि राजस्थान के 425 स्वतन्त्रता सेनानियों को सेंट्रल स्कीम के तहत पेन्शन मिल चुकी है (तालियां) और कुछ को मिलने की आशा है। 467 स्वतन्त्रता सेनानियों को ताम्रपत्र दिये जा चुके हैं। राज्य सरकार ने पिछले डेढ़ साल में 233 स्वतन्त्रता सेनानियों को अपनी तरफ से पेन्शन दी है। उनको अन्य सुविधायें भी मुहैय्या कराई जा रही हैं।

जैसा आपको मालूम है 1974–75 से हमारी फिफ्थ फाइव ईयर प्लान शुरू हो रही है। इस प्लान के कई बुनियादी मकसद हैं। एक तो यह है कि खेती पर आधारित रूरल इकोनोमी का इन्टीग्रेटेड प्लानिंग से विकास किया जाय। इससे गांवों की जनता की आमदनी बढ़ेगी और ज्यादा रोजगार भी मिलेगा। इसके लिये खेती और पशुपालन पर खास बल दिया जायेगा। इण्डस्ट्री और माइनिंग के विकास पर भी ज्यादा ध्यान दिया जायेगा। रेगिस्तानी अथवा ट्राईबल जैसे पिछड़े इलाकों का इन्टीग्रेटेड प्रोजेक्टस के जरिये विकास किया जायेगा। राजस्थान केनाल और चम्बल के कमान्ड ऐरिया के लिये भी इन्टीग्रेटेड प्लान बनाई जा रही है। प्लान की एक खास बात यह है कि इसमें गांवों की ग्राम जनता की बुनियादी जरूरतें जैसे तालीम, पीने के पानी रूरल इलेक्ट्रीफिकेशन, रूरल हैल्थ, रूरल रोड्स गन्दी बस्तियों में सुधार भूमिहीन काश्तकारों के मकानों के लिये जमीन और न्यूट्रीशन को पूरा करने के लिये मिनिमम नीड्स प्रोग्राम लागू किया जायेगा। इससे अब तक के दबे हुये तबकों की हालत में सुधार होगा और विकास के साथ सामाजिक न्याय हासिल हो सकेगा।

इस अधिवेशन का मुख्य कार्य जिसके लिए आपको यहां आमन्त्रित किया गया है यह आगामी वित्तीय वर्ष के आय-व्ययक पर विचार विमर्श करना एवं उसे पारित करना तथा इसके लिए कानून बनाना है। राज्य सरकार इस अधिवेशन में राजस्थान तेन्दू पत्ते (व्यापार का विनियमन) आर्डिनेन्स, 1973, राजस्थान म्युनिसिपल (अमेन्डमेंट) आर्डिनेन्स, 1974, राजस्थान पचायत विधियां (अमेन्डमेन्ट) आर्डिनेन्स, 1974, मोटर व्हीकिल (राजस्थान अमेन्डमेन्ट) आर्डिनेन्स, 1974, जोधपुर यूनिवर्सिटी (अमेन्डमेन्ट) आर्डिनेन्स, 1974, उदयपुर यूनिवर्सिटी (अमेन्डमेन्ट) आर्डिनेन्स, 1974 और दी राजस्थान इम्पोजीशन आफ सीलिंग आन एग्रीकल्चरल (होल्डिंग) (सैकिन्ड अमेन्डमेन्ट) बिल, 1974 आपके सामने विचार-विमर्श और उचित कार्यवाही के लिए प्रस्तुत करेगी।

आप अपने विचार-विमर्श में सफल हों, इस कामना के साथ मैं आपसे विदा लेता हूं।

जय हिन्द।

(19)

शुद्धि-पत्र

शनिवार, दिनांक 2 मार्च, 1974

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
1.	अन्तिम से 11	(आसींद)	(आसींद) ने
10.	,, 15	सदस्य	सदस्यों
14.	ऊपर से 4	दाम्पत	दाम्पत्य
26.	ऊपर से 15	फोडर	फीडर
29.	अन्तिम से 3	कमचारियों	कर्मचारियों